उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन

विनायक इंगले
सेन्ट पॉल शिक्षा महाविद्यालय,
खण्डवा (म.प्र)

डॉ.ज्योत्स्ना खरे
एन.इ.एस. शिक्षा महाविद्यालय,
होशंगाबाद (म.प्र)

प्रस्तावना :–

शिक्षा का कार्य बालक के सर्वांगीण विकास उसके मानवगत व्यवहार में स्थानान्तर तथा श्रेष्ठ अधिगम तथा उसकी विभिन्न प्रकार की शैली को विकसित करता हैं।

परिभाषा–''अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न आदत, ज्ञान और अभिवृत्तियॉ इसके अतिरिक्त हम कह सकते है कि अनुभव और प्रशिक्षण के माध्यम से व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।''

यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि अधिगम शैली क्या है, उनकी सीखने की प्रक्रिया क्या है एवं वे किस प्रकार तीव्रता से सफलता की ओर अग्रसर हो रहे है तथा वे छात्र जो गहराई से अपनी अधिगम शैली को प्रस्तुत करते है। इस प्रकार से अधिगम शैली पर एक नज़र डालने पर यह स्पष्ट होता है यदि इसका विशिष्टीकरण किया जाये तो सभी शैक्षणिक संस्थाओं में समानता पायी जायेगी। जैसा कि एक कक्षा में विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की अधिगम शैली के शिक्षा प्राप्त करते है, उनमें कुछ न कुछ समानता पायी जाती है। यह कहा जा सकता हैं कि अधिगम के दौरान व्यक्ति या विद्यार्थी जो तरीके अपनाता है वह सबके भिन्न–भिन्न होते है, वही उनकी अधिगम शैली होती है या साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि व्यक्ति के सीखने के विभिन्न तरीकों को अधिगम शैली कहा जाता है।

शैली :– व्यक्ति की शैली क्या है, उसका सार समझा जाता है। शैली को सतही तौर पर व्यक्ति के उपरी व्यवहार एवं उसकी विशेषताओं और व्यक्तिगत व्यवहार से समझा जाता है। शैली वास्तव में व्यक्ति की मर्यादा बनाये रखती हैं। शैली वह तत्व है जो कि मानव मस्तिष्क के आन्तरित स्तर को असाधारण रूप से विशेष ढंग से प्रदर्शित करने का कार्य करती हैं।

अधिगम शैली :– मनुष्य के आसपास के वातावरण के उत्तेजनायें होती हैं। इन उत्तेजनाओं के प्रति व्यक्ति की अनुक्रियायें प्रारंभ से स्वाभाविक व मूल प्रदृस्यात्मक होती हैं। अनुभव से वह जन प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन और परिमार्जन करता है,यह परिवर्तन, परिमार्जन और अधिगम क्रिया छात्र अपने जीवन में

भी करता है। इन परिष्कृत प्रतिक्रियाओं को करने की क्षमता ही अधिगम हैं परंतु जब इन परिष्कृत प्रतिक्रियाओं को छात्र अपनाते है या करते है तब सभी के अपने–अपने अलग–अलग तरीके होते है।

व्यक्तिगत विभिन्नता के अभिज्ञान पर अधिगम शैली की विचारधारा आधारित है। वह व्यक्ति की विशिष्टताओं को प्रदर्शित करती हैं। कक्षा पर्यवेक्षण के आधार पर यह पाया गया है कि विद्यार्थी को दिये गये कार्य को पुरा करने के लिये अभिप्रेरण और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती हैं। वह उसमें भिन्न होती है। इसके लिये अध्ययन के विभन्न तरीके होते है जो सीखने वालों की रूचि, स्वेच्छा और स्वतंत्र रूप से कार्य करने की क्षमता एवं अवधान पर आधारित होती हैं।

बुनियादी कार्यो के आधार पर सन् 1985 ''गिक्ट एण्ड गार्नर'' शैली को चार प्रकार से बांटा है, जो इस प्रकार हैं :–

1) ज्ञानात्मक शैली :– व्यक्ति अलग–अलग प्रकार से ज्ञाप प्राप्त करता हैं
2) संकल्पनात्मक शैली :– प्रत्येक व्यक्ति विचार करता है और विभिन्न तरीके के सोचता हैं।
3) प्रभावात्मक शैली :– प्रत्येक व्यक्ति जो अनुभव करता है, उन अनुभवों का विभिन्न प्रकार से मूल्यांकन करता हैं।
4) व्यवहारात्मक शैली :– व्यक्ति भिन्न–भिन्न ढंग से कार्य करता हैं।

अधिगम तथा अधिगम शैली विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित तो करती है किसी न किसी रूप में इनकी अधिगम शैलियों के विनिश्चयन में भी इनकी भूमिका हो सकती हैं। अधिगम शैली के साथ विभिन्न विषयों का संबंध ज्ञात करने के क्रम में विभिन्न शोधकताओं ने अलग–अलग विषय लेकर शोधकार्य किये हैं।

अध्ययन का उद्देश्य :–

- **उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना ।**

परिकल्पना :–

- **उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के शहरी बालक एवं ग्रामीण बालक की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा।**

पूर्व शोध :–

क्यूरी (1999) ने माध्यमिक शालाओं में अधिगम शैली का अध्ययन कर बताया की प्रेरणा अधिगम शैली और विद्यार्थियों की सफलता एक दुसरे से सम्बन्धित है।

शीह और गेमोन(2001) ने विद्यार्थियों की प्रेरणा, सीखने की शैली एवं उपलब्धि में संबंध का विष्लेषण कर पाया की अलग–अलग विद्यार्थियों की उपलब्धि, उनके व्यवहार और अधिगम शैली तीनों का एक दुसरे के साथ सम्बन्ध है। हर विद्यार्थी सीखने के लिए अलग–अलग अधिगम शैली का प्रयोग करते है, जिसके कारण उनके व्यवहार और उनकी उपलब्धि अलग–अलग होती है।

क्यूमीन और बैनजी(2005) ने विद्यार्थियों की अधिगम शैली का कुछ कक्षाओं में अध्ययन कर पाया की अधिगम शैलियों का विद्यार्थियों के सीखने पर प्रभाव पड़ता है।

वर्मा और गुप्ता(1996) अधिगम के प्रकार और शैली का व्यक्तित्व और अभिप्रेरणा पर प्रयोग किया और पाया कि उच्च उपलब्धि अभिप्रेरित लोगों ने परावर्तीत उन्मुखीकरण कार्यक्रम को महत्व दिया।

संगीता(1997) ने उच्च विद्यालय के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की अधिगम शैली का लिंग के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया और पाया कि प्रतिभाशाली बच्चों की अधिगम शैली कुछ क्षेत्रों से जुड़ी हुई थी। और उच्च विद्यालय के विद्यार्थी लचीले, दृष्टिगत, लंबे समय तक ध्यान केन्द्रित और अभिप्रेरण व पर्यावरण केन्द्रित अधिगम शैली को महत्व देते है।

शोध अध्ययन विधि :– उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विश्लेषण एवं वर्णन करने के लिए ''सर्वेक्षण विधि'' का उपयोग किया गया।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध कार्य की जनसंख्या में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय से उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी का चयन किया गया। इस जनसंख्या में शोधकार्य द्वारा न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में हिन्दी माध्यम के बुरहानपुर जिले के 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया इन चयनित विद्यार्थियों में छात्र एवं छात्राएँ दोनों होंगे।

उपकरण :– अधिगम शैली इनवेन्टरी–के मापन हेतु प्रो.के.एस.मिश्रा द्वारा निर्मित अधिगम शैली इनवेन्टरी का उपयोग किया गया। इस इनवेन्टरी को कक्षा 11 वी के विद्यार्थियों पर मानकीकृत किया गया। हिन्दी भाषा पर उपलब्ध इस इनवेन्टरी में कुल 42 कथन दिये गये हैं। म्दंबजपअम. 0.682, Figural - 0.742, Verbal- 0.903 हैं। साथ ही इसकी विषय वस्तु वैधता भी स्थापित की गइ थी। यह परीक्षण 15+ वर्ष के विद्यार्थियों के लिये था।

प्रदत्त संकलन :– शोधकार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का चुना किया गया। इसके पश्चात् विद्यालय के प्राचार्य से शोध कार्य हेतु अनुमति मांगी गईं। विद्यालय में जाकर 2 घण्टे का समय निश्चित किया गया। अधिगम शैली परीक्षण विद्यार्थियों से शिक्षकों के मार्गदर्शन से भरवाई गई।

प्रदत्तों का विश्लेषण :– उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के विद्यार्थियों के माध्य फलांको के तुलना के लिए सांख्यिकी प्रविधि उपयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधि :– उच्चतर माध्यमिक स्तर के अधिगम शैली का अध्ययन करने के लिये टी–परीक्षण का उपयोग किया गया।

सीमांकन–

1. शोध कार्य हेतु न्यादर्श का आकार 185 रखा गया हैं।
2. प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कक्षा 11 वी में अध्ययनरत् 15 + आयु स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया।
3. प्रस्तुत शोध में केवल कक्षा 11 वी में अध्ययनरत् वाणिज्य संकाय के विद्याार्थियों को सम्मिलित किया गया।
4. प्रस्तुत शोध में शासकीय विद्यालय में अध्ययनरत् शहरी बालक एवं ग्रामीण बालक दोनों को सम्मिलित किया गया।
5. शोध अध्ययन में शिक्षण माध्यम हिन्दी माध्यम के विद्याार्थियों का चयन किया गया।
6. शोध कार्य में केवल शोधकर्ता द्वार मानकीकृत परीक्षण का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विवेचना :–

तालिका– वाणिज्य समूह के शहरी बालक एवं ग्रामीण बालक के अधिगम शैली माध्यांक, न्यादर्श, मानक विचलन एवं टी–मूल्य को दर्शाती तालिका

क्षेत्र	न्यादर्श	माध्य	मनक विचलन	स्वतंत्रता कोटी	टी–मूल्य	सार्थकता का स्तर
शहरी ग्रामीण	100 85	144.17 135.40	18.73 21.08	183	2.962	0.000

तालिका से स्पष्ट है कि टी का मान 2.962 है, जिसके लिए सार्थकता स्तर का मान 0.000 है जो कि स्वतंत्रता कोटी 183 पर व 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शहरी बालक एवं ग्रामीण बालक के अधिगम शैली के माध्य प्राप्तांकों में अन्तर है। अतः तालिका से स्पष्ट है कि शहरी बालकों के अधिगम शैली के माध्य प्राप्तांक 144.17 एवं मानक विचलन 18.73 है इसी प्रकार ग्रामीण बालकों के अधिगम शैली के माध्य प्राप्तांक 135.40 तथा मानक विचलन 21.08 है। जो यह दर्शाता हैं कि शहरी बालकों की अधिगम शैली, ग्रामीण बालकों की अधिगम शैली से श्रेष्ट पायी गयी।

अतः शून्य परिकल्पना– उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य संकाय के शहरी बालक एवं ग्रामीण बालक की अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है– **निरस्त की जाती है।**

अतः निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि शहरीं बालकों के अधिगम शैली के माध्य प्राप्तांक, ग्रामीण बालकों के अधिगम शैली के माध्य प्राप्तांकों से सार्थक रूप से उच्च है।

प्रस्तुत अध्ययन के उपर्युक्त निष्कर्ष का प्रत्यक्षतः समर्थन या विरोध करने वाला कोई अध्ययन निष्कर्ष प्राप्त नहीं हुआ हालांकि वर्मा (1991) एवं गुप्ता (1996) ने अधिगम शैली को उपलब्धि अभिप्रेरणा से स्वतंत्र पाया जबकि इस्माईल (1982) ने जहां कला वर्ग के 95 विद्यार्थियों पर अध्ययन करते हुए निष्कर्ष निकाला। यद्यपि इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष उच्चतर माध्यमिक स्तर के वाणिज्य समूह के विद्यार्थियों से संबंधित होने के कारण न्यायोचित लगता हैं।

सुझावः–

1. प्रस्तुत शोध कार्य से विद्यालय के शिक्षकों मे शिक्षण कार्य के प्रति जागृति एवं रूची उत्पन्न होगी।
2. प्रस्तुत शोध कार्य इस स्तर के विद्यार्थी स्वयं अपनी अधिगम शैली को समझने के लिए प्रेरित होगें।
3. प्रस्तुत शोध कार्य के आधार पर शिक्षक वर्ग में जागृति उत्पन्न होगी।
4. प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से समाज के ऐसे अभिभावक जिनके बच्चे इस स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् है वह भी प्रेरित होगें।

संदर्भ :–

मिश्रा, मुरलीधर, 2006, संस्कृत एवं हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का उनकी बुद्धि, उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन,

वर्मा बी.पी. 1991, रिलेशनशीप बिटविन लर्निंग स्टाइल एण्ड एचीवमेंट मोटीवेशनल साईकोलिंग्वा, 21 (2), 73–78. वर्मा बी.पी. और मोना गुप्ता 1996 मोड्स एण्ड स्टाईल ऑफ लर्निंग एज फंक्शन ऑफ पर्सनलिटी, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 43, (7), 2304–